Fin. 6. What is the difference between NGO and Corporate?

६. एन.जी.ओ. और कॉर्पोरेट मे क्या फर्क है ?

- एन.जी.ओ. का उद्देश मुनाफा कमाना नही होता है। कॉर्पोरेट संगठन `मुनाफा कमाने' के हेतु से ही बनता है।
- एन.जी.ओ. के पास अगर अतिरिक्त पैसा है तो वो बोर्ड मेंबर्स मे बाटाँ नही जाता। लेकिन इसका मतलब ऐसा नही है की पैसा नही मिलता इस वजह से बोर्ड मेंबर्स एन.जी.ओ. के कार्य मे रुची नही लेते। एन.जी.ओ. के कार्य मे बोर्ड मेंबर्स का बहुत बडा `स्टेक' रहता है। अपना निजी फायदा दूर रखके उनको एन.जी.ओ. का कार्य करना होता है।

कॉर्पोरेट का कार्य कैसे चलता है ये देखेंगे।

आप एक व्यापारी संगठन हो जो सामान बनाते नही है लेकिन एक से खरीदकर दूसरे को बेचते है और टूथपेस्ट ये आपका सामान है। आप ठोक दाम मे (होलसेल रेट) रु. ४० से टूथपेस्ट खरीदते हो और ग्राहक को रु. ६० प्रती टूथपेस्ट ये रेट मे बेचते हो। आप हर टूथपेस्ट पर रु. २० मुनाफा कमाते हो। जब आप टूथपेस्ट खरीदते हो तो आपके पास से पैसा जाता है और सामान आता है। जब आप सामान बेचते हो तो आपके पाससे सामान जाता है और पैसा आता है। हर टूथपेस्ट पर आप रु. २० मुनाफा कमाते हो जो अपने लिये ले सकते हो और रु. ४० फिरसे सामान खरीदने मे इस्तेमाल करते हो।

अगर आप कुछ देते हो तो आपको कुछ मिलेगा. मुनाफा वाला व्यवसाय ऐसा चलता है। मुनाफा वाले काम मे व्यवहार की चक्राकार गती होती है।

स्वयंसेवी संस्था का कार्य ज्यादातर डोनेशन या ग्रांट पर चलता है।

दाता या डोनर कौन होता है ? क्या डीएफआयडी या युरोपियन कमिशन जैसे संगठन सच मे दाता या डोनर है ?

अपनी खुद की निजी आय से जो व्यक्ती कुछ देता है वो दाता है। बाकी सब मध्यस्त होते है। बहुत सारे डोनर्स मध्यस्त के संघटन को चंदा देते है। डोनर मध्यस्त संस्था को और मध्यस्थ संस्था स्वयंसेवी संस्था को निधी देता है और फिर इसका फायदा लाभार्थी को मिलता है।

कॉर्पोरेट मे होती है वैसी लेन देन एन.जी.ओ. मे नहीं होती. एन.जी.ओ. मे पैसे की एक शृंखला (चेन) होती है। डोनर या मध्यस्त संस्था को रीपोर्टस् भेजे जाते है। जो रुपया/धन बचता है उसे हम अतिरिक्त निधी कहते है और जहाँ ज्यादा खर्चा होता है उसे हम त्रुटी कहते है घाटा नही।